नशा ही नशा...!

शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य इस दुनिया की एक ही जीव है जिन्हें बुध्दिमता है। लेकिन किसी चीज़ के द्वारा किसी चीज़ से वह आसक्त हो गई तो वह गई। नशा एक ऐसी बीमारी है जो आसानी से फैलते है। वह कब, कैसे और किसके ऊपर होते है वह पता नहीं। मनुष्य कब, कैसे उस नशे की पीछे जाते है, वह रोकना थोड़ी मुश्किल ही है। नशा किसी चीज़ से भी हो सकते है।

नशा सुनते ही कहीं लोगों के मन में नशीली वस्तुओं आ सकते है। उससे ही शुरू करते है। आजकल छात्रों के बीच नशीली चीज़ों की उपयोग बढ़ता जा रहा है। उसे रोकने केलिए कई योजनाएँ भी है। उसकी मूल कारण हो सकते है बुरा मैत्री। ज़िंदगी एक ऐसी चीज़ है जिसमें बहुत सारे रास्ताएँ है। हमें अपने आप चुनना है किस रास्ते से हम जाऊँगा। जो रास्ता हमने चुना है वह अच्छा या बुरा होता है। दोस्तों को चुनना भी ऐसे ही एक रास्ता है। जिस दोस्ती को हमने अच्छा मानते है वह बुरा हो सकता है। वह दोस्ती से बहुत सारी कठिनाएँ आ सकते है। इसलिए अच्छी दोस्ती चुनना ज़रूरी होती है। अगर हम बुराई चुना तो हमारे ज़िंदगी में भी काला फैलना शुरू हो होती है। हमारे वह बुरे दोस्तों ने हमें कई चीज़ें सिखाया देता है जो हमारेलिए

पुण्य बिलकुल नहीं है। छात्रों के बीच की नशीली पर्थाथों का उपयोग रोकना इसलिए ज़रूरी है कि आज का छात्रों कल का राष्ट्र है। राष्ट्र को बड़ा बनाने में छात्रों का विशेष योजदान है। लेकिन उस राष्ट्र का भविष्य अब नशीली पर्दाथों के पीछे पड़े है। जैसे ऊपर बताया है, यह एक तरह की नशा जिसे खतम करना है। नशीली पर्दाथों के द्वारा छात्रों में बढ़ते जाने वाली यह नाशा भविष्य केलिए और उसके ज़िंदगी केलिए बहुत खतरनाक है। उससे बहुत बड़ी मानसिक और शारीरिक समस्यों को बनाते हैं। इस नशे के प्रतिफल मौत की रूप में आते है। उसे रोकना समाज की उत्तरदायित्व है। उस नशे के कारण ज़िंदगी बरबाद किए गए कई उदाहरणों हमारे बीच ही है।

प्यार किसी से भी हो सकते है। प्यार होने केलिए कई समय नहीं चाहिए। शास्त्र कहते है कि प्यार होने केलिए सिर्फ दो मिनट चाहिए। सोचो, इस दो मिनट में हो गई प्यार किसी भी वक्त टूट जाते है। शास्त्र यह भी कहता है कि किसी को किसी से होनेवाले प्यार छह महीनों के बाद खतम होती है। मनुष्य शरीर में होनेवाली एक प्रक्रिया है यह प्यार। वह मिलते ही खो सकता है। लेकिन कुछ रिश्ता सालों बात भी उतनी ही ताकत में जा रही होंगी। कहते है कि प्यार में

लोग अंधा होते हैं। सच है! हमारे तन, मन सब हमारी नहीं होते हैं। उस कारण से अपने आप खो जाते हैं सब। उस प्यार कभी एक को ही होंगी। जब एक व्यक्ति प्यार में होते हैं दूसरे से; दूसरे आदमी को वापस प्यार में होना ज़रूरी नहीं है। पहला आदमी केलिए उस प्यार एक नशा ही है। उस नशे के कारण वह क्या करते हैं वह खुद ही पता नहीं होंगी। अगर दूसरे आदमी उसको ना बोली तो खतम होंगी किसी का जीवन। दूसरे को मारने केलिए भी तैयार होंगी वह। उसका भी बहुत सारी उदाहरण है। इनमें से एक है। एक लड़की जो बारहवीं कक्षा में पढ़ते हैं। उसको एक लड़का प्यार करते थे। लेकिन उस लड़की को पसंद नहीं थीं। सिर्फ इस वजह से उस लड़की के घर में घुसकर उसको और उसकी बहन को मारने की कोशिश किया। सिर्फ इतना ही नहीं, उसकी बाँप के दुकान में आग भी लगा दिया। उस लड़की तो मर गई। बताइए, क्या करेंगे उस परिवार? हर बच्चा अपने माँ-बाप केलिए अनमोल खज़ाना है। उस खज़ाने को अपना जीवन देकर संरक्षण करेंगे वे। उस लड़की भी एक खाज़ाना थी उसकी माँ-बाप केलिए। यह सिर्फ एक है। सिर्फ हमारे इस छोटे केरल में ऐसे कई लोगों को प्यार की वजह से खो गई होंगी कई खाज़ाना। हर खाई खज़ाने का

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

कीमत बड़ा है।

ऊपर बताने वाले दो विषय सिर्फ समस्याएँ है। लेकिन ज़िंदगी में सिर्फ यह दो बुरा नशा नहीं आच्छा नशा भी है। जैसे पहले बताया था कि ज़िंदगी में सिर्फ एक नहीं बल्की कई शस्त्रायें है। ज़िंदगी खुद ही एक नशा है। ज़िदगी एक वरदान है। वह एक बार मिलती है। कहते है कि एक आदमी को सात जनम है। लेकिन क्या हमें पता चलता है कि यह हमारे पहलो या आखरी जनम है? नहीं। इसलिए उस छोटा समय जो जीने के और मरने के बीच है वह बहुत अनमोल है। इस छोटी-सी जिंदगी में खुशी और दुख की मिश्रण भी है। मानव कई सुंदर वस्तुओं को देखते है। उसे पाने का इच्छा करते है। कभी मिलते है कभी नहीं। कई लोगों से मिलते है जो परिचित या अपरिचित है। नए चीज़ों को पढ़ते है। यह सब इस छोटी ज़िंदगी में ही होते है। उसे एक और बार अनुभव नहीं कर सकते है। ऐसी अनुभव भी एक नशा ही है।

नशे के एक चरित है कि वह किससे होते है उसे कभी खोना नहीं चाहता है। ज़िंदगी में होनेवाली सभी अनुभव ऐसे ही है। उसे खोना नहीं चाहिए। उस नशे से उड़ने के बदले उसमें खोजाना ही चाहिए। लेकिन वह भी अवश्य तक। कभी

भी वह अधिक नहीं होना है। ज़िंदगी एक ऐसी नशा है जिसमें कई अलग-अलग नशाएँ आते है। लेकिन हमें सिर्फ एक नशा को हमारे साथ रखना है ; वह है ज़िंदगी ही। उस नशा में भी हम खतरे में हो सकते है। लेकिन उस नशे को नियंत्रित रखना हमारा ही कर्तव्य है।

कभी हम उस नशे में खोकर अपने बारे में सिर्फ सोच सकते है। लेकिन यहाँ है उस नशे को नियंत्रण करने का बू ज़रूरत। **सच** है कि हमें हमारे ज़िंदगी को प्यार करना है लेकिन दूसरें से भी प्यार करना है। सभी जीवजाल हमारे ज़िंदगी के हिस्सा है। उनसे प्रति हममें होनेवाली सब भाव हमारे ज़िंदगी में भी प्रकट होते है। इसलिए दूसरों को अच्छे से रखना ज़रूरी ही है। ऐसे ही हमारे ज़िंदगी में कई अनमोल अनुभव संभव होते है।

जैसे ऊपर बताया है, ज़िंदगी में कई नशाएँ हो सकती है। उन सबको बदलना चाहिए हम। प्यार में आक्रमित होने के बदला उसे और प्यार करना चाहिए। जो नशा नशीली चीज़ों केलिए है उसे अपने बचपन को प्यार करने में बदलना है। वह ही है उस बुरा नशाओं से दूर जाने के एक ही रास्ता। नशा को हटाना थोड़ी-बहुत मुश्किल ही है। लेकिन उस नशे को किसी ओर में बदलना आसान है। नशा कभी भी हमसे दूर नहीं जाते है।

हमें आ जाना चाहिए। वह सावधान ही होंगे। लेकिन कोशिश तो करना है। इसलिए हम ~~कोशिश~~ कोशिश करना है वह बदलने को। बुराई से अच्छाई में जाना उतना कठिन रास्ता नहीं है। कोशिश करते रहो हो जाएगा। सिर्फ बदलना नहीं नियंत्रण करना भी सीखना है नशे को। विदाई सिर्फ ~~लड़की~~ के मानव को नहीं नशे का भी होते है। ज़िंदगी का नशा को अनुभव करने के लिए दूसरे नशे के पीछे नहीं जाना चाहिए। ज़िंदगी अपना आप ही एक नशा है। वह अनुभव हमारे ज़िंदगी के अंत तक हमारे साथ ही होंगे। आगे जाओ जो ~~खुशियाँ~~ आ रहा है उसे नशा बनाओ। क्योंकि ज़िंदगी ही नशा है।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)